हिन्दी Hindi Class 12 Important Question Chapter 6 भरत–राम का प्रेम/पद

1.'भरत-राम का प्रेम' कविता कहाँ से ली गई है?

उत्तर: भरत-राम का प्रेम कविता तुलसीदास की अयोध्या खंड से ली गयी है जो कि रामचरितमानस का एक भाग है।

2. 'पद' के दो पद कहाँ से लिए गए है?

उत्तर: 'पद' के दो पद गीतावली से लिए गये हैं जिसकी रचना तुलसीदास ने की है। इनके पदों में श्रीराम के जीवन के बारे में चर्चा की गई है।

3. माता कौशल्या राम को क्या कह के बुला रही है?

उत्तर: माता कौशल्या राम को कहती है कि राम तुम जिस घोड़े को इतना प्यार देते थे आज वो तुम्हारे बिना अच्छे नहीं है। तुम अपने घोड़ो के लिए ही वापस लौट आओ।

4. कवि ने माता कौशल्या के दुख की तुलना किससे की है?

उत्तर: कवि ने माता कौशल्या के दुखों की तुलना एक मोर से ही है। वो कहते हैं जैसे मोर मग्न होकर नाचते-नाचते अपने पैरों को देखकर उदास हो जाता है वैसे ही माता कौशल्या भी राम को बार-बार याद कर के उदास ही जाती हैं।

5. 'पद' कविता में क्या विशेष है?

उत्तर: इस कविता में करुणा रस है। यह कव्यांश अवधी मिश्रित ब्रजभाषा में लिखित हैं। इस कविता में अनुप्रास तथा उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग किया गया है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

1. पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े।। कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एही तें अधिक कहौं मैं काहा।।

निम्न पंक्तियों का भावार्थ लिखो।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से तुलसीदास राम और भरत के मिलाप का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि भरत ऋषि मुनियों के साथ राम से मिलने वन गए थे। जब उनको बोलने को कहा जाता है तब वो रोने लगते हैं और कहते हैं कि ऋषि मुनि ने सब कुछ कह दिया अब उनके कहने के लिए कुछ बचा नहीं है। मैं अपने भाई का स्वभाव जानता हूँ, वे कभी हमको दुखी नहीं देख सकते हैं।

2. मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर को न का ऊ।। इन पंक्तियों का भावार्थ लिखो।

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर: उपरोक्त पंक्ति में भरत अपने भाई राम के व्यवहार के बारे में बता रहे हैं और कहते हैं कि जब मेरे भाई ने कभी अपराधियों को दंद नहीं दिया, मैं ती उनका भाई हूँ। मैं उनका स्वभाव जानता हूँ। उन्होंने मुझे कभी निराश नहीं किया है।

3. जननी निरखति बान धनुहियाँ।

बार बार उर नैननि लावति प्रभुजू की ललित पनहियाँ। इन पंक्तियों का भावार्थ लिखो।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि कहते हैं कि माता कौशल्या श्रीराम के खेलने वाले धनुष-बाण को देखती है और उनकी सुंदर छोटी छोटी जूतियों को अपने हृदय और आँखो से बार-बार लगाती है।

4. राघौ! एक बार फिरि आवौ।

ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहि सिधावौ।। इन पंक्तियों का भावार्थ लिखो।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति में कवि कहते हैं की माता कौशल्या अपने राम से कह रही कि "हे राघव! तुम एक बार तो जरूर लौट आओ एक बार फिर से आ जाओ" ये अयोध्या तुम्हे बुला रही है। वो कहते है कि एक बार यहाँ आ कर अपने घोड़ों देख लो और फिर वापस चले जाना।

5. जे पय पोखी कर-पंकज वार वार। इन पंक्तियों का भावार्थ लिखो।

उत्तर: ऊपर दी गयी पंक्ति में माता कौशल्या कहती हैं कि राम तुम वापस लौट आओ। वह उनको उनके घोड़ों दुहाई देते हुए कहती हैं कि तुम अपने घोड़ो को भी भूल गए हो। ये वहीं घोड़े हैं जिनको तुम भोजन तथा पानी पिलाया करते थे और प्यार देते थे। तुम्हें तुम्हारे घोड़े याद कर रहे है तुम इनको बस एक बार आकर मिल लो।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (5 अंक)

1.'मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ' इन पंक्ति के माध्यम से राम किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

उत्तर: इन पंक्तियों के आधार पर राम की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(क) श्रीराम का स्वभाव करूणामयी और प्यार करने वाला है। उन्होंने भरत को बालयपन से ही प्यार दिया है।

(ख) श्रीराम को सबसे ज्यादा प्रिय भरत थे। इसलिए वह हमेशा ही भरत का भला सोचते थे।

(ग) श्रीराम खेल के मैदान में भी भरत पर क्रोधित नहीं होते थे। उन्होंने हमेशा भरत को प्रसन्न करने का प्रयास किया है।

(घ) श्रीराम कभी अपराध करने वालों पर भी क्रोधित नहीं होते थे।

2. 'हारेन्हु खेल जितावहि मोहि' इस पंक्ति का भावार्थ लिखो।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से तुलसीदास श्रीराम चन्द्र और भरत के सकारात्मक चरित्र को प्रस्तुत करते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीराम जी अपने भाई भरत को खेल के मैदान में हमेशा जितने देते हैं क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि भरत को किसी भी प्रकार का कष्ट हो। भरत उनके भाई श्रीराम चन्द्र जी की प्रशंसा करते हैं

https://www.evidyarthi.in/

और कहते हैं कि श्रीराम जी बहुत दयालु और प्रेम करने वाले भाई हैं। इस प्रकार दोनों भाई एक-दूसरे के लिए सकारात्मक विचार रखते हैं। दोनों के बीच बहुत प्यार और श्रद्धा है।

3. बताइए कि भरत राम के प्रति अपनी श्रद्धा कैसे प्रकट करते हैं।

उत्तर: भरत को अपने बड़े भाई बहुत प्रिय हैं। भरत के लिए श्रीराम भगवान समान हैं और वह खुद को उनका भक्त समझते हैं। जब भरत जी वनवास के दौरान श्रीराम से भेंट करने जाते हैं तो श्रीराम बहुत प्रसन्न होते हैं। अपने भाई को देखकर वह अपने आँसू नही रोक पाते हैं। भरत जी ने अपने भाई को गुरु की संज्ञा दी और फिर उनकी सभी विशेषताओं को बताया।

4. अपने शब्दों में 'रहि चकि चित्रलिखी सी' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति ने पुत्र वियोगिनी माता की पीड़ा दिखाई देती है। माता कौशल्या श्रीराम से वियोग के कारण दुखी और आहत है। वह श्रीराम की वस्तुओं से अपना मन बहलाने की कोशिश कर रही हैं लेकिन उनका दुख लगातार बढ़ता जा रहा है। वह अपने बेटे की होने वाली कठिनाईयों के बारे में सोचकर दुखी हो जाती है और खुद की परवाह करना भी छोड़ देती है। वह इतनी दुखी है कि उनके चेहरे पर कोई अभिव्यक्ति नहीं है।

5. उपमा अलंकार के दो उदाहरणों को क्रमबद्ध करें।

उत्तर: उपमा अलंकार के दो उदाहरण निम्नलिखित हैं-

(क) 'कबहूँ समुझी वनगमन राम को रही चकि चित्रलिखी सी'- उपरोक्त पंक्ति में 'चित्रलिखी सी' में उपमा अलंकार है। राम को अपने पास नहीं पाने पर माता के कौशल्या चित्र के स्त्री की भाँति स्तब्ध हो जाती है। वह हिलती-डुलती नहीं है।

(ख) तुलसीदास वह समय कहे ते लागति प्रीति सिखी सी- उपरोक्त पंक्ति में 'सिखी सी' उपमा अलंकार है। इसमें माता कौशल्या की स्थिति को मोरनी के रूप में दिखाया गया है। जब बारिश होती है ती मोरनी उत्साह से नाचने लगती है लेकिन जब वह अपने पैरों को देखती है तो वह दुखी होकर रोने लगती है।

https://www.evidyarthi.in/